रोकथाम :–

1. बीज को मेन्कोजेब 3 ग्राम / कि0ग्रा0 की दर से उपचारित करना चाहिये।
2. रोग के प्रारम्भ होने पर मेन्कोजेब को 10 दिनों के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करना चाहिये।

सरसों का तना सड़न रोग :–

लक्षण :– इस रोग में पत्तियों के निचले भाग में मटमैले भूरे रंग के धब्बे बनने लगते हैं। इसकी अधिकता होने पर कई तरह सफेद जाल दिखाई पड़ने लगते हैं जो कि बाद में मुरझाकर टूट जाते हैं।

रोकथाम :– बीज को कार्बेन्डाजिम नामक दवा 3 ग्रा0 / कि0 ग्रा0 बीज की दर से अथवा ट्राइकोडर्मा विरीडी 10 ग्रा0 / कि0ग्रा0 बीज से उपचारित करना चाहिये। रोग की अधिकता होने पर कार्बेन्डाजिम 2.5 ग्रा0 / ली0 की दर से छिड़काव करना चाहिए।

कीट प्रबंन्धन :–

सरसों का चेपा या लाही कीट या माहू :– यह कीट दिसम्बर माह से लेकर फरवरी तक ज्यादा प्रभावी रहता है। यह शिशु एवं वयस्क दोनो ही अवस्था में नुकसान पहुंचाती है साथ ही मधुश्रव के कारण पौधों की पत्तियों का रंग कवकों के कारण काला हो जाता है।

नियंत्रण :–

1. इस कीट की रोकथाम हेतु नीम आधारित कीटनाशी (3000 पी0 पी0 एम0) को 3 मिली / लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिये ।
2. यलो ट्रैप 25–35 की संख्या में लगाना चाहिये ।
3. रसायनिक कीटनाशक इमिडाक्लोप्रिड 1 ग्राम /3 ली पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिये ।

सरसों की आरा मक्खी :– इस कीट का सरसों की फसल पर सुबह एवं शाम के समय ज्यादा प्रकोप होता है। यह कीट पत्तियों एवं फलियों को खाकर नष्ट कर देती है।

नियंत्रण :–

1. गरमा की जुताई करना चाहिये।
2. सरसों की अगेती खेती करना चाहिये।
3. प्रोफेनोफास या क्यूनॉलफास 1.25 मिली लीटर की दर से छिड़काव करना चाहिये।

कटाई :– सरसों की फसल लगभग 115–140 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। पौधों की पत्तियों, फलियों एवं तने का रंग पीला होने लगता है, उस अवस्था में फसल को काटकर खलिहाल में सूखने हेतु रखना चाहिए। सूखने के बाद मड़ाई का कार्य करना चाहिए।

उपज :– वैज्ञानिक ढंग से सरसों की खेती करने से (सिंचित) में 14–18 क्विं प्रति हेक्टेयर तक उपज मिल जाती है।

नोट :– सरसों की फसल 25–30 दिन होने पर प्रथम सिंचाई के पश्चात् फसल के मूल तने को काट देने से बढ़कर रुक जाती है जिससे उन पौधों में शाखाओं की संख्या बढ़ने से उपज में बढ़ोतरी होती है।

Print_Maana Flex Gumla_6203781827

संकलन एवं संपादन :–

अटल बिहारी तिवारी, डॉ0 संजय कुमार, मृत्युंजय कुमार सिंह, श्वेता विश्वकर्मा

INTERNATIONAL YEAR OF MILLETS 2023

सरसों की वैज्ञानिक खेती

सरसों रबी मौसम की प्रमुख तिलहनी फसल हैं हमारे देश की अर्थ व्यवस्था में इसका विशेष योगदान है। हमारे देश में सरसों की खेती काफी लोकप्रिय हो रही है क्योकि फसल उत्पादन लागत कम है एवं सरसों बहुफसली या अन्तवर्ती खेती के लिये काफी उपयुक्त है। सरसों के पत्तों का उपयोग साग एवं चारे के रूप में, बीज का उपयोग मसाले एवं तेल के लिये किया जाता है। जबकि तेल निकालने के पश्चात् खली का उपयोग पशुओं के आहार के रूप में इस्तेमाल करते हैं। गुमला जिले में सरसों की खेती लगभग 17000 हे0 में की जाती है। जिले के किसान सरसों की वैज्ञानिक तरीके से खेती कर अपनी आमदनी को बढ़ा सकते है।

कृषि विज्ञान केन्द्र गुमला

विकास भारती बिशुनपुर

भा.कृ.अनु.प.-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान जोन-IV पटना

ईमेल : kvk.gumla@gmail.com | वेबसाइट : http://gumla.kvk4.in

जलवायु :–

गुमला जिले की जलवायु सरसों की खेती के लिये काफी उपयुक्त है क्योंकि सरसों के अच्छे उत्पादन हेतु 18 से0 से लेकर 30 से0 तापमान की आवश्यकता होती है। वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन की वजह से उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पडा है जिससे निपटने हेतु हमें वैज्ञानिक खेती को अपनाना होगा।

मृदा का चुनाव :– सरसों की खेती हेतु दोमट मिटटी से बलुई दोमट मिटटी काफी उपयुक्त हैं सामान्यतः मृदा का पी0एच0 मान 7 से 8 होना चाहिये।

खेत की तैयारी :– सरसों/राई की अच्छी फसल लेने हेतु 2 से 3 जुताई करने के पश्चात पाटा चलाकर खेत को समतल कर लेना चाहिये । इसके पश्चात बुवाई कार्य करना चाहिये।

सरसों/राई के प्रमुख प्रभेदों का चयन

क्र0	किस्म	अवधि (दिनों में)	उपज (क्वि/हे0)	तेल की मात्रा (प्रतिशत)
1	शिवानी	100–105	10–12	40–41
2	पूसा बोल्ड	115–120	12–14	41–42
3	पूसा मस्टर्ड–25	105–110	10–14	35–40
4	पूसा विजय	130–140	20–25	35–38
5	पूसा मस्टर्ड–28	105–110	15–20	37–41
6	पूसा मस्टर्ड–30	119–140	15–20	35–38
7	पूसा मस्टर्ड–32	130–140	25–27	35–38
8	पूसा डबल जीरो मस्टर्ड 33	130–140	20–26	36–38
9	पूसा मस्टर्ड–29	130–140	20–21	35–37
10	पूसा तारक	130–140	18–20	38–40

बीज दर एवं बुवाई का समय

क्र0	फसल	बीज दर कि0 ग्रा0	बुवाई का समय
1	सिंचित क्षेत्रों	4.5–5	15 अक्टूबर –15 नवम्बर तक
2	असिंचित क्षेत्रों में	5–6	15 सितम्बर से 15 अक्टूबर तक

Print_Maana Flex Gumla_6203781827

बीज उपचार :– सरसों की फसलों को बीज जनित (Soil Born) रोगों से रोकथाम हेतु ट्राईकोडर्मा विरीडी 10 ग्राम/किग्रा0 की दर से या बाविस्टीन 2 ग्राम/ किग्रा0 या मेटालेक्जिल 6 ग्राम/कि0 ग्रा0 बीज की दर से उपचारित करना चाहिये।

बुवाई फसल अन्तरण :– पौधों से पौधों की 10 से0 मी0 एवं कतार से कतार की दूरी 30 से0 मी0 रखना चाहिये। अन्तवर्ती फसलों जैसे :–

1 सरसों + गेंहूँ :– (1:9)
2. सरसों + मसूर :– (1:9)
3. सरसों + चना (1:9) के अनुपात में कतार से कतार लगाना काफी लाभप्रद पाया गया है।

खाद एवं उर्वरक :– सरसों की अच्छी पैदावार हेतु गोबर की सड़ी हुई खाद 8–10 टन बुआई के दो सप्ताह पूर्व खेत में मिला दें। इसके पश्चात मृदा जाँच के आधार पर रासायनिक खादों का प्रयोग करें।

	मात्रा किग्रा./हे0			
	नाईट्रोजन	फास्फोरस	पोटाश	सल्फर
सरसों की सिचिंत क्षेत्र	80	60	40	20
सरसों की असिचिंत क्षेत्र	40	30	20	10

खरपतवार नियंत्रण :– सरसों की फसल में अनेकों प्रकार के खरपतवार जैसे :– प्याजी मोथा, अकरी, दूब एवं बथुआ आदि घास अधिक नुकसान पहुचाते है। इन घासों के नियंत्रण हेतु प्रथम गुड़ाई कार्य 25–30 दिन पर एवं द्वितीय गुड़ाई एवं निकाई कार्य 50 दिन बाद करना चाहिये। यदि रसायनिक तरीके से खरपतवार नियंत्रित करना हो तो पैण्डीमैथालिन नामक दवा 2.5 से 3 लीटर दवा बुवाई के तुरन्त बाद छिड़काव करने से खरपतवार नियंत्रित हो जाते हैं।

सिंचाई प्रबन्धन : प्रथम सिंचाई बुवाई के 25–30 दिन, द्वितीय सिंचाई 40–45 दिन, एवं तृतीय सिंचाई फली बनते समय 60–65 दिन पर करनी चाहिये, आवश्यकता पड़ने पर दाना भरते समय सिंचाई करने से दाने पुष्ट बनते हैं।

रोग एवं कीट प्रबन्धन :–

डाउनी मिल्डयू अथवा श्वेत किट्ट रोग

लक्षण :– यह रोग सामान्यतः सभी जगहों पर पाया जाता है। जिस समय तापमान 10–18 डिग्री से0 के आसपास रहता है, यह तेजी से फैलता है। इस रोग में पत्तियों के निचले हिस्से पर सफेद पाउडर के साथ चकते बनते हैं, जबकि ऊपरी भाग पर भूरे धब्बे बन जाते हैं।

रोकथाम :–

1. इसकी रोकथाम हेतु मेटालेक्जिल 6 ग्रा0/कि0 ग्रा0 बीज की दर से उपचारित करना चाहिये ।
2. अक्टूबर माह (अगेती) सरसों की बुआई करना चाहिये।
3. रोग के लक्षण दिखाई देने पर रिडोमिल (MZ-72) या सल्फर 3 ग्राम/ली0 की दर से छिड़काव करें।

सरसों का झुलसा एवं काला धब्बा रोग

लक्षण :– पत्तियों पर गोल भूरे धब्बे बनने लगते हैं जो कुछ दिनों में आपस में मिलकर पत्तियों को झुलसा देते हैं। रोग की आक्रमकता बढने पर दाने छोटे, सिकुड़े एवं बदरंग हो जाते हैं।